निंदा रस

(1) 'क' कई महीने बाद आए थे। सुबह चाय पीकर अखबार देख रहा था कि वे तूफ़ान की तरह कमरे में घुसे। 'साइक्लोन' की तरह मुझे अपनी भुजाओं में जकड़ा तो मुझे धृतराष्ट्र की भुजाओं में जकड़े भीम के पुतले की याद आ गयी। यह धृतराष्ट्र की ही जकड़ थी। अंधे धृतराष्ट्र ने टटोलते हुए पूछा, "कहाँ है भीम? आ बेटा, तुझे कलेजे से लगा लूं।" और जब भीम का पुतला उनकी पकड़ में आ गया तो उन्होंने प्राणघाती स्नेह से उसे जकड़कर चूर कर डाला।

1. **उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**
   उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश प्रसिद्ध व्यंग्यकार **'हरिशंकर परसाई'** द्वारा लिखित **'निन्दा रस'** नामक पाठ शीर्षक से उद्धृत है।
2. **रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर- 'क' कमरे में तूफ़ान की तरह घुसे और साइक्लोन की तरह मुझे अपनी भुजाओं में जकड़ लिया। मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा तो मुझे धृतराष्ट्र की भुजाओं में जकड़े भीम के पुतले की याद आ गयी। धृतराष्ट्र अन्धे थे। उन्होंने भीम के पुतले को जिन्दा समझ कर मारने का प्रयास किया था।
3. **'क' किस तरह कमरे में घुसे और उन्होंने किस तरह मुझे भुजाओं में जकड़ा?**
   उत्तर- 'क' कमरे में तूफान की तरह घुसे और साइक्लोन की तरह मुझे भुजाओं में जकड़ा।
4. **लेखक को किसके पुतले की याद आ गयी?**
   उत्तर- लेखक को धृतराष्ट्र की भुजाओं में जकड़े भीम के पुतले की याद आ गयी।
5. **धृतराष्ट्र ने भीम के पुतले के साथ क्या किया?**
   उत्तर- जब भीम का पुतला धृतराष्ट्र की पकड़ में आ गया तो उन्होंने प्राणघाती प्रेम से उसे जकड़ कर चूर कर डाला।

(2) निंदा का उद्गम ही हीनता और कमजोरी से होता है। मनुष्य अपनी हीनता से दबता है। वह दूसरों की निंदा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। उसके अहम् की इससे तुष्टि होती है। बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर बड़ी बनती है। ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है, त्यों-त्यों निंदा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। कठिन कर्म ही ईर्ष्या-द्वेष और इनसे उत्पन्न निंदा को मारता है। इंद्र बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है क्योंकि वह निठल्ला है। स्वर्ग में देवताओं को बिना उगाया अन्न, बे बनाया महल और बिन-बोये फल मिलते हैं। अकर्मण्यता में उन्हें अप्रतिष्ठित होने का भय रहता है, इसलिए कर्मी मनुष्यों से उन्हें ईर्ष्या होती हैं। इन्द्र बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है क्योंकि वह निठल्ला है। स्वर्ग में देवताओं को बिना उगाया अन्न, वे बनाया महल और बिन बोये फल मिलते हैं। अकर्मण्यता में उन्हें अप्रतिष्ठित होने का भय बना रहता है, इसलिए कर्मी मनुष्यों से उन्हें ईर्ष्या होती है।

1. **उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**
   उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश प्रसिद्ध व्यंग्यकार **'हरिशंकर परसाई'** द्वारा लिखित **'निन्दा रस'** नामक पाठ शीर्षक से उद्धृत है।
2. **रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।**
   रेखांकित अंश-1- निंदा का उद्गम ही हीनता..... बढ़ती जाती है।
3. उत्तर- परसाई जी कहते हैं कि मनुष्य के हीनभावना और उसकी कर्महीनता से निंदा का जन्म होता है। जब व्यक्ति में हीनता की भावना प्रवेश कर जाती है, तब वह आलसी हो जाता है और उसकी कर्म शक्ति क्षीण हो जाती है। तब वह निंदा का आश्रय लेकर स्वयं को ऊँचा दिखाने का प्रयास करता है और अपनी हीनता छिपाने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार व्यक्ति आत्महीनता के बोझ से दबा रहता है। हीनभावना से ग्रस्त व्यक्ति दूसरों की निंदा करके तथा उन्हें तुच्छ और निकृष्ट बताकर अपने अहं की तुष्टि करते हैं। वे समझते हैं कि इस प्रकार वे समाज में अपने महत्त्व की स्थापना कर रहे हैं। जिस प्रकार एक लम्बी लकीर को छोटी करने के लिए उसके कुछ भाग को मिटाकर छोटी लकीर को बड़ा किया जाता है उसी प्रकार जैसे-जैसे मनुष्य के कर्म क्षीण होते जाते हैं वैसे- वैसे निन्दा बढ़ने लगती है।
4. **रेखांकित अंश-2- इन्द्र बड़ा ईर्ष्यालु.....ईर्ष्या होती है।**
   उत्तर- परसाई जी कहते हैं कि इन्द्र को बड़ा ईर्ष्यालु देवता माना जाता है; क्योंकि उसे कुछ नहीं करना पड़ता, वह निठल्ला रहता है। उसे खाने के लिए अन्न नहीं उगाना पड़ता, फल पाने के लिए पेड़ नहीं बोने पड़ते, रहने के लिए बना-बनाया महल मिल जाता है। खाली रहने के कारण उसे अपनी अप्रतिष्ठा का डर बना रहता है। इसलिए वह किसी तपस्वी को तपस्या करते देखकर, किसी कर्मठ व्यक्ति को श्रेष्ठ कर्म करते देखकर ही भयभीत हो जाता है कि कहीं यह अपनी कर्मठता से मेरे पद को न छीन ले; अतः वह उससे ईर्ष्या करने लगते हैं।
5. **निन्दा की प्रवृत्ति कब बढ़ती है?**
   उत्तर- लेखक का कहना है कि जैसे-जैसे व्यक्ति कर्महीन होता जाता है। वैसे-वैसे उसमें निंदा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है।
6. **देवताओं को भय क्यों बना रहता है?**
   उत्तर- देवताओं को कर्महीनता की स्थिति में अप्रतिष्ठित होने का भय बना रहता है।
7. **निन्दा रस का उद्गम कब होता है?**
   उत्तर- निंदा रस का उद्गम हीनता और कमजोरी से होता है।

www.gyansindhuclasses.com

8. **कर्मक्षीण होने पर किसकी प्रवृत्ति बढ़ जाती है?**
   उत्तर- कर्मक्षीण होने पर निंदा की प्रवृत्ति बढ़ जाती है।
9. **निन्दा का उद्गम स्थल क्या है?**
   उत्तर- निंदा का उद्गम स्थल कर्महीनता है।
10. **निन्दक व्यक्ति दूसरों की निन्दा करके कैसा अनुभव करता है?**
    उत्तर- निन्दक व्यक्ति दूसरों की निन्दा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है।
11. **इन्द्र को ईर्ष्यालु क्यों माना जाता है?**
    उत्तर- निठल्ला होने के कारण इन्द्र को ईर्ष्यालु माना जाता है।
12. **'हीनता' और 'कर्मक्षीण' का शब्दार्थ क्या है?**
    उत्तर- 'हीनता' का अर्थ तुच्छता और 'कर्मक्षीण' का अर्थ कर्महीनता है।
13. **निन्दा का उद्गम कहाँ से होता है?**
    उत्तर- निंदा का उद्गम हीनता और कमजोरी से होता है।
14. **देवताओं को कर्मी मनुष्यों से क्यों ईर्ष्या होती है?**
    उत्तर- लेखक के अनुसार देवताओं को कर्मी मनुष्यों से ईर्ष्या इसलिए होती है, क्योंकि वे अकर्मण्य होते हैं।
15. **ईर्ष्या-द्वेष और निन्दा को मारने के लिए क्या आवश्यक है?**
    उत्तर- कठिन कर्म ईर्ष्या-द्वेष और निन्दा को मारने के लिए आवश्यक है।
16. **स्वर्ग में देवताओं को बिना श्रम का क्या प्राप्त होता है?**
    उत्तर- स्वर्ग में देवताओं को बिना उगाया अन्न, बे बनाया महल और बिना बोये फल मिलते हैं।

(3) ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दा भी होती है। लेकिन इसमें वह मजा नहीं जो मिशनरी भाव से निन्दा करने में आता है। इस प्रकार का निन्दक बड़ा दुःखी होता है। ईर्ष्या द्वेष से चौबीसों घंटे जलता रहता है और निन्दा का जल छिड़ककर कुछ शान्ति अनुभव करता है। ऐसा निन्दक बड़ा दयनीय होता है। अपनी अक्षमता से पीड़ित वह बेचारा दूसरे की सक्षमता के चाँद को देखकर सारी रात श्वान जैसा भौंकता है। ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दा करनेवालों को कोई दण्ड देने की जरूरत नहीं है। वह बेचारा स्वयं दण्डित होता है। आप चैन से सोइए और वह जलन के कारण सो नहीं पाता। उसे और क्या दण्ड चाहिए? निरन्तर अच्छे काम करते जाने से उसका दण्ड भी सख्त होता जाता है। जैसे एक कवि ने एक अच्छी कविता लिखी, ईर्ष्याग्रस्त निन्दक को कष्ट होगा। अब अगर एक और अच्छी लिख दी तो उसका कष्ट दुगना हो जायेगा।

1. **उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**
   उत्तर- उपर्युक्त।
2. **'अक्षमता' और 'निरन्तर' शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।**
   उत्तर- **अक्षमता**- क्षमता से रहित, **निरन्तर**- लगातार।
3. **'दयनीय' और 'दण्डित' शब्दों में क्रमशः प्रत्यय छाँटकर लिखिए।**
   उत्तर- 'दयनीय'- अनीय (प्रत्यय), दण्डित- इत (प्रत्यय)
4. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर- **रेखांकित अंश की व्याख्या**- निंदक दो प्रकार के होते हैं- प्रथम, जिनका स्वभाव ही निंदा करने का हो अर्थात् मिशनरी निंदक और दूसरे, ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निंदक। मिशनरी भाव से की गई निंदा बिना किसी भेद-भाव के धर्म प्रचार जैसे पुण्य कार्य की भावना से की जाती है। इस प्रकार की निंदा टॉनिक का कार्य करती है। ईर्ष्या भाव से प्रेरित होकर निंदा करने में वह आनंद नहीं आता जो मिशनरी भाव से प्रेरित होकर निंदा करने में आता है। ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निंदक अत्यधिक दुःखी एवं पीड़ित होता है। ईष्या-द्वेष से जलता हुआ व्यक्ति चौबीस घण्टे जलता है। वह निन्दा रूपी जल छिड़ककर शान्ति का अनुभव करता है तथा ऐसा निन्दक बहुत ही दयनीय होता है।
5. **निन्दा कितने प्रकार की होती है?**
   उत्तर- निंदा दो प्रकार की होती है- प्रथम मिशनरियों द्वारा की गयी निंदा और दूसरी- ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निंदकों द्वारा की गयी निंदा।
6. **अपनी अक्षमता से पीड़ित निन्दक दूसरे की सक्षमता के चाँद को देखकर कैसा व्यवहार करता है?**
   उत्तर- वह सारी रात श्वान जैसा भौंकता है।
7. **लेखक के अनुसार ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित होकर निन्दा करने वाले व्यक्ति किस प्रकार स्वयं को दण्डित करते हैं?**
   उत्तर- ईर्ष्या-द्वेष से प्रभावित व्यक्ति को दण्ड की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि वह स्वयं ही अपनी प्रकृति के कारण दुःख प्राप्त करता है, ईर्ष्या की पीड़ा के कारण एक पल भी सुख से चैन की नींद सो नहीं पाता है।
8. **ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दक किस कारण सो नहीं पाता?**

www.gyansindhuclasses.com
www.gyansindhuclasses.com

उत्तर- ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित व्यक्ति कुत्ते की भाँति सो नहीं पाता और रातभर भौंकता रहता है क्योंकि दूसरे की सक्षमता उसे पसन्द नहीं है।

9. **ईर्ष्या-द्वेष से निन्दा करने वाले निन्दक की स्थिति कैसी होती है?**
   उत्तर- ईर्ष्या-द्वेष से निंदा करने वाले निंदक की स्थिति श्वान जैसी होती है।
10. **मिशनरी भाव से निन्दा करने में क्या मिलता है?**
   उत्तर- मिशनरी भाव से निन्दा करने से जैसे टानिक प्राप्त होती है।
11. **किस प्रकार के निन्दक को दण्ड देने की कोई जरूरत नहीं होती? कारण बताइए।**
   उत्तर- मिशनरी निन्दक को दण्ड देने की कोई जरूरत नहीं होती। कारण यह कि ऐसा निन्दक बेचारा स्वयं दण्डित होता है।

(4) निंदा कुछ लोगों की पूंजी होती है। बड़ा लम्बा-चौड़ा व्यापार फैलाते हैं वे इस पूंजी से। कई लोगों की प्रतिष्ठा ही दूसरों की कलंक-कथाओं के पारायण पर आधारित होती है। बड़े रस-विभोर होकर वे जिस-तिस की सत्य कल्पित कलंक-कथा सुनाते हैं और स्वयं को पूर्ण संत समझने की तुष्टि का अनुभव करते हैं।

www.gyansindhuclasses.com

1. **उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**
   उत्तर- उपर्युक्त।
2. **निन्दा किसकी पूँजी होती है?**
   उत्तर- निंदा कुछ लोगों की पूँजी की तरह होती है।
3. **कुछ लोगों की प्रतिष्ठा का आधार क्या होता है?**
   उत्तर- कुछ लोगों की प्रतिष्ठा का आधार दूसरों की निंदा होती हैं।
4. **'सत्य कल्पित कलंक' कथा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।**
   उत्तर- 'सत्य कल्पित कलंक कथा' का अर्थ 'सच्ची काल्पनिक कलंकपूर्ण' घटना' है। ऐसी कथा जिसकी केवल कल्पना की गई हो।
5. **रेखांकित अंश का अर्थ स्पष्ट कीजिए।**
   उत्तर- कुछ लोग निंदा को उसी प्रकार महत्त्व देते हैं, जैसे व्यापारी अपनी पूँजी को देता है। वे निंदा को पूँजी समझते हुए ही अपना व्यापार बढ़ाने में लगे रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की अधिक से अधिक सर्वत्र निंदा करना ही उनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य होता है। उनकी यह धारणा होती है कि वे जितनी अधिक निंदा करेंगे, उतना ही लाभ उनको प्राप्त होगा।

(4) अद्भुत है मेरा यह मित्र। उसके पास दोषों का 'केटलाग' है। मैंने सोचा कि जब वह हर परिचित की निन्दा कर रहा है, तो क्यों न मैं लगे हाथ विरोधियों की गत, इसके हाथों करा लूँ। मैं अपने विरोधियों का नाम लेता गया और वह उन्हें निन्दा की तलवार से काटता चला। जैसे लकड़ी चीरने की आरा मशीन के नीचे मजदूर लकड़ी का लट्ठा खिसकाता जाता है और वह चीरता जाता है, वैसे ही मैंने विरोधियों के नाम एक-एक कर खिसकाये और वह उन्हें काटता गया। कैसा आनन्द था। दुश्मनों को रण-क्षेत्र में एक के बाद एक कटकर गिरते हुए देखकर योद्धा को ऐसा ही सुख होता होगा।

1. **उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।**
   उत्तर- उपर्युक्त।
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर- **रेखांकित अंश की व्याख्या** - लेखक का निन्दक मित्र बहुत ही अद्भुत और विचित्र है जिसके पास दोषों और बुराइयों का अच्छा-खासा सूची-पत्र है। उनके सम्मुख जिस किसी की भी चर्चा छिड़ जाती वह उसी की निन्दा में चार-छः वाक्य बोल दिया करता था। लेखक के मन में विचार आया कि क्यों न वह भी अपने कुछ एक परिचितों की जो उसके विरोधी हैं, की निन्दा उसके माध्यम से करवा ले।
3. **लेखक ने किसका उदाहरण आरा मशीन से दिया है?**
   उत्तर- लेखक ने निन्दक का उदाहरण आरा मशीन से दिया है।
4. **लेखक ने अपने विरोधियों की गत किसके हाथों कराने का विचार किया?**
   उत्तर- लेखक ने अपने विरोधियों की गत निन्दक मित्र के हाथों कराने का विचार किया।
5. **योद्धा को क्या देखकर निन्दक के जैसा ही सुख प्राप्त होता होगा?**
   उत्तर- दुश्मनों को रण-क्षेत्र में एक के बाद एक कटकर गिरते हुए देखकर योद्धा को निन्दक जैसा ही सुख प्राप्त होता होगा।

www.gyansindhuclasses.com

हमारे YouTube चैनल पर विजिट करने के लिए अभी स्कैन करें अथवा सर्च करें
Gyansindhu Coaching Classes

www.gyansindhuclasses.com

www.gyansindhuclasses.com